वीर वचनावली

भाई वीर सिंह

वीर वचनावली

वीर वचनावली

(भाई वीर सिंह जी की कुछ कविताओं का संकलन)

भाई वीर सिंह साहित्य सदन
भाई वीर सिंह मार्ग
नई दिल्ली–110 001

वीर वचनावली

भाई वीर सिंह

Second Edition 1997

प्रकाशक :

भाई वीर सिंह साहित्य सदन

भाई वीर सिंह मार्ग

नई दिल्ली-110 001

मूल्य : 30/-

प्राक्कथन

आज संसार में जितनी भी समस्याऐ हैं उनका मूल कारण हमारा एक दूसरे की बात को सही माध्यम द्धारा अथवा संचार न हो पाना ही है। संसार में आपसी प्रेम प्यार को बढावा देना चाहते हो तो अपनी बात को दूसरों की भाषा में करना जरूरी है। सब को भारतीय संस्कृति के मंच को सम्पूर्ण रूप मे अपना मान कर चलने से ही हमारा तथा राष्ट्र का भला है।

'गीतांजली' देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित होने से जैसे ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर को समझने में हमें बहुत आसान काम हो गया उसी तरह मुझे विश्वास है ऐसे अनेक लोग होंगे जो आज तक भाई साहिब भाई वीर सिंह की कवितायों से केवल इस लिए अपरिचित हैं क्यों कि वे अभी तक गुरमुखी लिपि में ही प्रकाशित होती रही हैं। बहुत से विद्धानों की प्रेरणा से भाई साहिब भाई वीर सिंह जी की कुछ चुनी हुई कवितायों को देवनागरी लिपी में प्रस्तुत करने का भाई वीर सिंह साहित्य सदन का यह तुछ सा प्रयास है ता कि भाई साहिब की रचनाओं का रसास्वादन और ज्यादा से ज्यादा हो सके।

अनुवाद के माध्यम द्धारा कविता की समुची सुन्दरता पाठकों तक नहीं पहुँच पाती, ऐसा मेरा विश्वास है। कविता का वास्तविक रस तो उसके मूल रूप में ही प्राप्त क्रिया जा सकता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि अनुवाद का कुछ भी महत्व नहीं।

आखिर में इतना ही कहूंगा कि भाई साहिब भाई वीर सिंह जी उन गुरूजनों में से थे जिनके चरणों में बैठकर मुझ जैसे मानव अपना जन्म सफल करते थे। वह ऐसे सत्यपुरूष थे कि उनके बारे में जितना भी लिखूँ वह कम है, पूर्ण नही हो सकता। वर्तमान साहित्यक पंजाबी भाषा के जन्मदाता, भारतीय संत कवि परंपरा के प्रतीक, आत्मानुभूति सन्देश वाहक एवं पंजाबी भाषा भाषियों को अमृत रस का दान देने वाले भाई साहिब के संबंध में मै निमाणा जन क्या कहूँ? देवनागरी भाषा के पाठकों को अपील करता हूँ कि वह इन कवितायों का पूरा पूरा रसास्वादन जरूर करें।

हरि भजन सिंह

हरिभजन सिंह

प्रोफैसर इमेरीटस
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आमुख

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

पंजाबी भाषा के वयोवृद्ध कवि भाई साहब भाई वीरसिंहजी की चुनी हुई कविताओं का संग्रह देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित किया जा रहा है। मुझसे अनुरोध किया गया है कि मैं इस संकलन के लिए आमुख लिखने का उत्तरदायित्व निभाऊं। पहले मैंने सोचा कि यह कार्य तो किसी पंजाबी साहित्यकार को ही करना चाहिए था। फिर यह सोचकर कि भारतीय संस्कृति के मंच से तो मैं भी इस शुभ कार्य का अभिनन्दन कर सकता हूँ, मैंने सहर्ष इसे स्वीकार कर लिया।

भारतीय साहित्य की आधुनिक प्रगति की चर्चा मुझे प्रिय रही है। मेरा विश्वास है कि स्वतन्त्र भारत के सांस्कृतिक नवोत्थान के लिए यह आवश्यक है कि सभी प्रादेशिक भाषाएं नूतन साहित्य-राशि से सम्पन्न हो जायं और इन भाषाओं के साहित्य में परस्पर आदान-प्रदान का क्रम चलता रहे, जिससे भारतीय सांस्कृतिक एकता और भी सुदृढ़ हो जाय।

मैंने अनेक पंजाबी मित्रों को यह कहते सुना है कि भाई साहब भाई वीरसिंह 'आधुनिक पंजाबी साहित्य के पिता' हैं। भाई साहब की कविताओं का संकलन देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित किया जा रहा है—यह समाचार पढ़कर मुझे ध्यान आया कि आज से अनेक वर्ष पूर्व प्रयाग के इण्डियन प्रेस द्वारा रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित की गई थी। इससे एक लाभ यह भी हुआ था कि उन लोगों के लिए भी जो बंगला लिपि से परिचित नहीं थे 'गीतांजलि' उपलब्ध हो गई। इसी तरह मुझे विश्वास है कि ऐसे अनेक लोग होंगे जो आज तक भाई साहब भाई वीरसिंह की कविताओं से केवल इसीलिए अपरिचित होंगे क्योंकि वे अभी तक गुरुमुखी लिपि में ही प्रकाशित होती रही हैं।

भाई साहब की कविता के बारे में अधिक कह सकूँ, यह मेरे लिए संभव नहीं। फिर भी मैं इस प्रकाशन का स्वागत करता हूँ। इससे भाई साहब के पाठकों की संख्या में वृद्धि होगी और साथ ही यह भी पता चलेगा

कि देवनागरी लिपि सांस्कृतिक एकता का कितना बड़ा साधन है ।

प्रोफेसर पूर्णसिंह को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने 'नरगिस' नामक संकलन में भाई साहब भाई वीरसिंह की कुछ श्रेष्ठ कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए थे। अनुवाद के माध्यम द्वारा कविता की समूची सुन्दरता पाठकों तक नहीं पहुँच पाती, ऐसा मेरा विश्वास है। कविता का वास्तविक रस तो उसके मूल रूप में ही प्राप्त किया जा सकता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि अनुवाद का कुछ भी महत्व नहीं। मैं यह आशा करता हूँ कि जैसे प्रोफेसर पूर्णसिंह ने अंग्रेज़ी भाषा के पाठकों के सम्मुख भाई साहब की कविताओं के अनुवाद प्रस्तुत करने का दायित्व निभाया, कोई ऐसा निष्ठावान व्यक्ति भी अवश्य आगे आयेगा जो भाई साहब की कविताओं के अनुवाद हिन्दी के पाठकों के लिए उपलब्ध कर सके। मैं भाई वीरसिंह अभिनन्दन-ग्रन्थ-समिति का आभारी हूँ जिनके आग्रह के कारण मैं इस शुभ कार्य में सम्मिलित हो सका।

२६ जनवरी, १९५१,
नई दिल्ली

कवि-परिचय

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

भाई वीरसिंह जी उन गुरुजनों में हैं, जिनके चरणों के समीप बैठकर मुझ जैसे मानव अपना जन्म सफल कर सकते हैं। ऐसे सत्पुरुष के संबंध में मेरे लिए कुछ कहना न केवल धृष्टता ही है वरन् अनधिकार चेष्टा भी। वर्त्तमान साहित्यिक पंजाबी भाषा के जन्मदाता, भारतीय सन्त कवि परंपरा के प्रतीक, आत्मानुभूति सन्देशवाहक एवं पंजाबी भाषा भाषियों को अमृत रस का दान देनेवाले भाई वीरसिंह जी के संबंध में मैं, एक नगण्य जन, क्या कहूँ ? वे एक प्रणम्य सत्पुरुष, एक वन्दनीय साहित्य-स्रष्टा, एक रमणीय महाकवि और एक अडिग आस्थामयी विभूति हैं।

उनकी साहित्य-कृतियों ने पंजाबी भाषा के स्वरूप को संवारा, उसकी आत्मा को झंकृत किया तथा उसके प्रवाह को शाश्वत भावना प्रदान की। भाई साहब वीरसिंह जी उस सन्त परंपरा के कवि हैं जो हमारे देश में शताब्दियों से चली आ रही है। इस परंपरा के कवि शब्दों के आडम्बर में विश्वास नहीं करते। वे केवल कल्पना के लोक में विचरण नहीं करते। वे केवल उपमा-अलंकार के जाल में नहीं फँसते। उनकी कृतियों में, उनकी वाणी में आत्म-अनुभूति अभिव्यक्त होती है। भाई वीरसिंह जी की वाणी में आत्मा की आकुलता और आत्मा की उपलब्धि का अभिव्यंजन है।

उनकी पंजाबी कविताओं का देवनागरी अक्षरों में प्रकाशन हो रहा है। यह हिन्दी भाषा-भाषियों का अहोभाग्य है। इस संबंध में मेरा एक निवेदन है। इन कविताओं के चयनकर्त्ता महाशय ने इतनी कृपा तो की है कि शब्दों का अर्थ पाद-टिप्पणी में दे दिया है, पर फिर भी कविताओं का रसास्वादन करने में कठिनता होती है। इस कारण, यदि भाई जी की कविताओं का गद्य-अनुवाद हिन्दी में दे दिया जाय तो बहुत अच्छा हो। इससे दो लाभ होंगे—एक तो यह कि हिन्दी भाषी जन भाई जी की अमृत वाणी का पूर्ण रस ले सकेंगे; और दूसरे यह कि वे पंजाबी भाषा की व्यंजना को, अर्थात् पंजाबी भाषा को, सीख भी सकेंगे। मैं इस सुझाव को प्रकाशक एवं चयनकर्त्ता

महाशय के सम्मुख इस आशा से रख रहा हूँ कि वे इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

जो भाई वीरसिंह गत पचास वर्षों से पंजाबी भाषा के साहित्य को अनमोल रत्न प्रदान कर रहे हैं, जिन भाई वीरसिंह के पुनीत व्यक्तित्व से पंजाब प्रान्त गत अर्द्ध शताब्दी से सुगन्धित हो रहा है, उन भाई वीरसिंह जी को हिन्दी भाषा का मैं यत्किंचित् सेवक भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

४ मार्च, १९४९,
नई दिल्ली

सूची

विछड़ी कूँज

. . . . . .
. . . . . .
. . . . . .
. . . . . .

मिठ्ठे तां लगदे मैनूं
फुल्लां दे हुलारे,
जान मेरी पर कुस्सदी[1]

. . . . . .
. . . . . .
. . . . . .
. . . . . .

---

१ कसकती

टुकड़ी[1] जग तों न्यारी

अरशां दे विच कुदरत देवी,
मानूं[2] नज़रीं आई,
'हुस्न मंडल' विच खड़ी खेलदी[3],
खुशियां छहिबर[4] लाई।
दौड़ी ने इक मुठ[5] भर लीती,
इस विच की की आया:
परबत, टिब्बे[6], अते करेवे[7]
विच मैदान सुहाया,
चश्मे, नाले, नदियां, झीलां,
निक्के जिवें समुन्दर,
ठंडियां छांवां, मिठियां हावां,
वन बागां जहे[8] सुन्दर,
बरफां, मींह, धुप्पां ते बदल,
रुत्तां मेव प्यारे,
अरशी नाल नजारे आए
उस मुट्ठी विच सारे,
सोहणी[9] ने असमान खड़ो के
धरती वल्ल[10] तका के,

---

१ भूखंड, २ हमें, ३ खेलती, ४ फुहार, ५ मुट्ठी, ६ टीला, ७ घाटी, ८ जैसे, ९ रूपसी, १० ओर।

एह मुट्ठी खुल्ली ते सुटिया,
सभ कुछ हेठ[1] तका के।
जिस थावें धरती ते आके
इह मुठ डिग्गी[2] सारी—
ओस थाउं[3] 'कश्मीर' बन गिआ,
टुकड़ी जग तों न्यारी।
है धरती पर 'छुह[4] असमानी'
सुन्दरता विच लिश्के,[5]
धरती दे रस स्वाद, नजारे,
(पर) 'रमज़ अरश' दी चस्के।

1 नीचे, २ गिरी, ३ स्थान, ४, स्पर्श, ५ चमके।

कशमीर ते सुन्दरता

जिक्कुर[1] रुलदे सेब
ते नशपातियां
विच गिरां[2] कशमीर
तीकर[3] रुल रही
सुन्दरता विच खाक—
लीरां[4] पाटियां,
जिक्कुर फुल्ल गुलाब
टुट्टा ढह पवे
मिट्टी घट्टे विच्च
होए निमानडा[5]।

---

१ जैसे, २ गांव, ३ उसी प्रकार, ४ चीथड़े, ५ दीन हीन।

महिंदी

-- साजन के हाथ लगी हुई

आपे नी अज रात सजन ने
सानूं फड़[1] घुट रख्या,
'वसल माही[2] दा मिहर माही दी'
अज असां ने लख्या,
जिन्दड़ी[3] साडी[4] अंग समा लई
वेख वेख खुश होवे :
क्यों सैयो[5] कोई स्वाद सजन ने
छुह साडी दा वी चख्या ?

---

१ पकड़ कर, २ प्रियतम, ३ जीवन, ४ हमारी, ५ सखियो ।

किक्कर[1]

कढ्ढ सिरी[2] उप्पर नूं टुरिआ
        वल्ल[3] अकाशां जावां,
उप्पर नूं तक्कां रब्ब वन्ने
        झात[4] न होरथे पावां,
शहर गिरां[5] महिल नहीं माड़ी[6]
        कुल्ली[7] ढोक[8] न भालां,
मींह हनेरी[9] गड़े[10] धुप्प विच
        नंगे सिर दिन घालां,
लो अरशां दे वाली[11] वन्ने
        होर[12] लालसा नाहीं,
गिठ्ठ थांऊं धरती तों लीती
        वधां, टिकां, इस माहीं,
फुल्लां, फलां, खिड़ां, रस चोवां
        रह अछोत[13] टुर जावां,

---

१ बबूल २ सिर, ३ ओर, ४ दृष्टि, ५ गांव, ६, ७, ८ झोंपड़ी, कुटिया ९ आंधी १० ओले, ११ स्वामी, १२ अन्य, १३ निर्लेप ।

कुल्ली, गुल्ली,[1] जुल्ली[2] दुनिया

बिन मंगे मर जावां,

मींह् दा पीवां पाणी दुनियां

पौण[3] भक्ख के जीवां,

सदियां तों इस्थित[4] मैं जोगी

सदियां इवें टिकीवां,

छेड़ां छेड़ करावां नाहीं

हां[5] विरकत[6] निरगुणियां,

मेरे जोगा[7] बी तैं[8] पल्ले[9]

हाय, कुहाड़ा, दुनियां।

---

१ रोटी, २ कपड़ा, ३ पवन, ४ स्थित, ५ मैं हूँ, ६ विरक्त, ७ लिये, ८ तेरे, ९ पास।

कमल गोदी विच त्रेलं-मोती

कमल पत्त ते पिआ हां
मैं हां मोती त्रेल,[1]
भूमां जीकूं[2] नीर ते
पत्ता करदा केल[3]।
सूरज रिश्म प्रोतड़ा[4]
हेठां उतर्या आन,
सोने तार प्रोतड़े
मोती वांगूं जान।
डल्हकां 'गोदी कमल' मैं,
चमकां ते थर्राउं,[5]
जीकूं खिड़ी सवेर दी
किरन दए लहिराउं।
भाग भरे जिस हत्थ ने
पलभाया[6] मैं हेठ,[7]
सभ नूरां दा हत्थ ओह
कादर, मालक, सेठ।
उहो सुहावा हत्थ है
शाह मेरे दा हत्थ,

---

१ ओस, २ जैसे, ३ क्रीड़ा, ४ पिरोया हुआ, ५ थरथराता हूँ, ६ उतार, ७ नीचे।

सारे हत्थ उस हत्थ दे
रहिंदे हेठां हत्थ।
कमल गोद अज खेडदा
रख्या मैं उस हत्थ,
कल पर गोदी ओसदी
खेडांगा छड्ड वित्थ[1]।
घल्ले[2] सद्दे[3] पातशाह
एथे[4] ओथे[5] आप,
अमर खेड मैं ओसदी
खेड खिडावे बाप।

---

१ अन्तर, २ भेजता है, ३ बुलाता है, ४ यहां, इहलोक, ५ वहाँ, परलोक।

'कवि-रंग' सुन्दरता

अर्थात् वह 'उच्च सुन्दरता की प्रतीति' जिसके आवेश में कवि से उच्च काव्य की सृष्टि होती है—

कविता दी सुन्दरताई
उच्चे नछत्रीं[1] वसदी,
अपणे संगीत लहरें
अपणे प्रकाश लसदी[2]।
इक शाम नूं ए, ओथों[3]
हेठां पलमदी आई,
रस रंग नाल कम्बदी[4]
संगीत थरथराई :
ज्यों त्रेल[5] तार प्रोती
ज्यों आब मोतियां दी
नज़रां दी तार प्रोती
नाज़क, सुबक[6] सुहाई।
कोमल गले दी सुर ज्यों
झुनकार साज़ दी ज्यों,
झरनाट रूप वाली
तारे डलहक[7] ज्यों छाई।
ज्यों मींड थरकें[8] खिच्यां[9]
खिच खा मैं रह जो कम्बी,

[1] नक्षत्रों में, [2] चमकती, [3] वहां से, [4] कांपती हुई, [5] ओस-बिन्दु, [6] रोमांच, [7] प्रकाश, [8] कांपे, [9] खींचने से।

हुस्नां दे रंग लहरे
रस भूम इक झुमाई।
पंछी उडार[1] वांगूं
आपे दे खम्ब फड़कें,
इक सूर सिर नूं आया
इक तार सिर झुमाई।
पुछया असां: 'हे सोहणी[2]
तू आप सुन्दरता है,
हीरे ज्वाहर वांगूं
टिकदी हैं क्यों तूं नाहीं?
परबत खड़े सुहावे
झीलां ते बन समुन्दर,
कायम इन्हां दी शोभा
दायम[3] रहे है छाई।'
बोली ओ थरथरांदी
लरजे वजूद वाली[4]:
'बिजली दी कूंद दस तूं
टिकदी किवें टिकाई?
लस देके किरन सूरज
लरजे दे देश जावे,

1 उड़ने को तैयार, 2 सुन्दर, 3 सदैव, 4 जिसका।

सुर राग दी थरांदी
किसने है बन्ह[1] बहाई ?
उल्का[2] अकाश लिश्कै
चमकार मार खिस्के,
जुस्सा[3] धनुख अकाशी
किसने टिका लिआई ?
चन्दों रिशम जु तिल्के
तार्यां जु डल्क पलमें,
दे के मटक्का खिस्के[4]
टिकदी नजर न आई।
चात्रिक दी प्यार चितवन
कोयल दी कूक कोह्णी,
गम्कार दे नसावे[5]
काबू कदों है आई ?
लरजा वतन जिन्हां दा
लरजा वजूद उन्हां दा,
चक्कर अनन्त अटिकवें
ओह्नां दी चाल पाई।

---

१ बांध, २ आकाश में टूटते हुए तारे, ३ शरीर, ४ चलते बने, ५ भाग जाती है।

वित्थां[1] अमिणवियां[2] विच
सिर चीरदे थरांदे,
जांदे अनन्त चालीं
चमकां दे हन ओ साईं।
चमकार रंग देणा
रस झूम विच झुमाणां,
इक जिन्द छोह लाणी
अटकण नहीं किथाईं[3]।
लरजा वतन जिन्हां दा
लरजा वजूद उन्हां दा,
'रखा अनन्त अटिकवीं
लरजे दे मत्थे पाई।'

---

१ अन्तर, २ जो मापी न जा सके, ३ कहीं।

प्रीतम छोह

तुसां तोड़या असीं टुट पए
विछुड़ गए सां[1] डालों,
तुसां सुंघ सीने ला सुटया[2]
विछुड़ गए तुसां नालों,
पैरां हेठ लिताड़ लंघाउआं[3]
कीता खंभड़ी[4] खंभड़ी
पर शुकराना 'छोह तुहाडी' दा
अजे न गुज़दा सानों[5]।

१ थे, २ फेंक दिया, ३ गुज़रने वालों ने, ४ पंखड़ी, ५ हमें।

भुल्ल चुक्की[1] सभ्यता

पंडताणी कशमीर,
सत्कार लवे, दिस[2] आंवदी,
इज्ज़तदार अमीर
पहरावा उस सोहणा[3]।
वरी[4] हया दे नाल
सुन्दरता उस फब रही,
फिरदी खुल्ले हाल-
संग[5] नहीं फिर लाज है।
तुर फिर रही तस्वीर
किसे पुराणें समें दी,
जद होसी कशमीर
सभ्य, प्रवीण, सुतंतरा[6]।

---

१ विस्मृत, २ दिखाई देती, ३ सुन्दर, ४ ब्याही गई, ५ संकोच, ६ स्वतन्त्र।

मेरी जिन्दे !

तेरा थाउं[१] किसे नदी दे किनारे
              तेरा थाउं किसे जंगल बेले,[२]
तेरे भागां विच अरशां[३] ते उडणा
              ते गांद्यां फिरन अकेले,
तेरा जीवन सीगा[४] तेरे ही जोगा[५]
              तूं आप 'आपे' नाल खेले,
तूं किवें रौल्यां[६] विच आ खलोती
              तेरे चार चुफेरे झमेले।

---

१ स्थान, २ नदी के किनारे की धरती, ३ आकाश, ४ था, ५ तेरे ही लिए, ६ शोर में।

फुहार

मुंह् अड्डी[1] अरशां वल तकिये[2]
(इक) बूंद् न कोई पावे,
जदों असां विच आ गया कोई
आ उह् छहिबर लावे,
तदों असीं हो दाते वसिए[3]
ठंड सुहावा[4] वाले,
किधरों, कौण, कदों दस सखिये
कित गुण ओह् कोई आवे ?

१ खोलकर, २ देखिये, ३ बरसते हैं, ४ सुहावनी ।

विनफशा दा फुल्ल

मेरी छिपी रहे गुलज़ार, मैं नीवां उगया,
कोई लगे न नज़र टपार, मैं परबत लुक्कया[1],
मैं लया अकाशों रंग-जु शोख न वन्न[2] दा,
हां, धरां गरीबी मंग मैं आया जगत ते।
मैं पियां अरश दी त्रेल पलां[3] मैं किरन खा,
मेरी नाल चांदना खेल रात रल खेलिये।
मैं मस्त आपणे हाल मगन गन्ध आपणी
हां दिन नूँ भौंरे नाल भी मिलणो संगदा[4]।
आ शोख़ा करके पौण जदों गल लग्गदी
मैं नाहिं हिलावां धौण वाज न कड्ढदा[5]।
हा, फिर भी टुट्टां हाय विछोड़न वालयो!
मेरी भिन्नी[6] इह खुशबोए[7] किवें न छिप्पदी।
मेरी छिपे रहण दी चाह ते छिप टुर जाण दी
हा! पूरी हुन्दी नांह मैं तरले लै रिहा।

१ पर्वत की ओर छिपा हुआ, २ रंग, ३ पलता हूँ, ४ संकोच करता हूँ,
५. शब्द तक नहीं निकालता, ६ भीनी, ७ सुगन्धि।

महिंदी दे बूटे कोल

महिंदिए नी रंग रतिए नी
काहनूं रखिआई रंग लुका सैये[1] !
हथ रंग साडे शरमाकले नी
वन्नी[2] अज्ज सुहाग दी ला लैये
गिद्धे[3] मारदे सां जिन्हां नाल हत्थां
रंग-रतड़े दे गले पा दैये
गल पा गलवकड़ी[4] खोह्लिए ना
रंग ला रंग-रतड़े सदा रैये ।

---

१ हे सखी, २ रंग, ३ ताली, ४ गलबाहियां ।

कश्मीर तों विदैगी

सोहणयां तों जद विछड़न लगिए
  दिल दिलगीरी खावे,
पर तैथों टुरदयां[1] कश्मीरे !
  सानूं ना दुख आवे,
'मटक दिलोरा' छोह[2] तेरी दा
  जो रूह साडी लीता[3],
खेड़े वाली[4] मस्ती दे रिहा
  नाल[5] नाल पया जावे ।

---

१ बिछुड़ने पर, २ स्पर्श, ३ लिया, ४ विकसित करने वाली, ५ साथ ।

अमर रस

सुहणे हत्थ सुराही प्याला
देख दुखी खुश होई,
खुश होई मुख वेख सजन दा
देख सुराही रोई।
रोंदी वेख सजन हस आखे :
'कौड़ी[1] आब[2] न ल्याया[3],
अमृत एस सुराही भरया[4]
पिए ते जीवे मोई।'
दे इक बूँद सुराहियों सानू
सोच समुन्दर बोड़े[5],
बेखुदियाँ दे चाढ़ अरश ते
आम अन्देसे तोड़े,
रंग सुहावे ते नौरंगी
पींघ घुके आनन्दी,
आण हुलारे अमर सुखां दे
मुड़न न ऐसा जोड़े।

---

१ कड़वी, २ मदिरा, ३ लाया, ४ भरा हुआ है, ५ डुबा दे।

कंबदी कलाई

सुपने विच तुसीं मिले असानूं
असां धा[1] गलवकड़ी[2] पाई
निरा नूर तुसीं हत्थ न आए
साडी कम्बदी रही कलाई,
धा चरनां ते सीस निवाया[3]
साडे मत्थे छोह न पाई
तुसीं उच्चे असीं नीवें सां
साडी पेश न गैया काई,
फिर लड़[4] फड़ने नूं उठ दौड़े
पर लड़ ओह 'बिजली लहरा'
उडदा जांदा, पर उह अपणी
छोह सानूं गया लाई—
मिट्टी चमक पई इह मोई
ते तुसीं लूआँ[5] विच लिशके,
बिजली कूंद गई थरांदी
हुण चकाचूँध है छाई।

---

१ दौड़कर, २ गलबाहीं, ३ झुकाया, ४ पल्लू , ५ रोम।

त्रेल ते सूरज

घाह[1] उत्ते मैं पई त्रेल[2] हाँ
नैण नैण हो रइयाँ,
'दरस प्यास' विच नैण भर रहे,
पाणी पाणी होइयाँ;
'दरस प्यास' हुण रूप मिरा है
मैं विच होर न बाकी,
चढ़ अरशों, आ अंग लगा,
मैं बिछी तिरे राह पैयाँ ।

---

१ घास, २ ओस कण ।

लगियां निभरा

पत्थर नाल न्योंह[1] ला बैठी
ना हस्से ना बोले,
सुहणा लग्गे मन नूँ मोहे
घुंडी[2] दिलों न खोल्हे।
छडयां छडया जांदा नाहीं[3]
मिलयां निग्घ[4] न कोई।
इच्छा[5], जिवें रजा है तेरी
अखियोंह[6] होहु न ओल्हे[7]।

१ स्नेह, २ रहस्य, ३ छोडते हैं तो छोड़ा नहीं जाता, ४ उष्ण, सन्तोष, ५ अच्छा, ६ आँखों से, ७ ओझल।

रौं रुख

सागर पुछदा[1] : 'नदिये ! सारे
बूटे बूटियाँ ल्यावें
पर ना कदी बैंत दा बूटा
एथे[2] आण पुचावें ?'
नदी आखदी : 'आकड़ वाले
सभ बूटे पट सक्कां[3],
पर जो झुके वगे रौं[4] रुख नूं
पेश न उसते जावे ।'

---

1 पूछता है, २ यहाँ, ३ उखाड़ सकती हूँ, ४ वेग के साथ ।

नाम, ध्यान, रज़ा

नाम सजण दा जीभ चढ़ गया।
जां सज्जण उठ टुरया,
मल्ल लए दो नैण ध्यान ने
सबक रज़ा दा फुरया,
विरहों दे हथ सौंप असानू
जे सज्जण तू राज़ी!
याद तुसाडी[1] छुटे न साथों
प्यार रहे लूँ[2] पुड़या[3]।

---

१ तुम्हारी, २ रोम, ३ समाया।

बरदा के मालक

इक मेले विच फिरे आदमी
गल विच फट्टी पाई—
फट्टी ते लिख्या : 'मैं बरदा,
'विकां[1]', लओ कोई भाई'
लैण लगे मैंनूं किवे[2] किहा :
'ए मालक नहीं टोले[3],
'एस भेस ए बरदा लबे[4]
चाहे हुकम चलाई ।'

[1] मैं बिकना चाहता हूँ, [2] किसी ने, [3] ढूँढता है, [4] ढूँढता है ।

बृच्छ

धरती दे हे तंग-दिल लोको !
नाल असां क्यों लड़दे ?
चौड़ दाओ[1] असां नहीं वधणा[2]
सिद्धे[3] जाणा चढ़दे,
घेरे ते फैलाउ असाडे
विच असमानां होसण,[4]
गिट्ठे[5] थाउं धरती ते मल्ली
अजे तुसीं हो लड़दे ?

---

१ दिशा, २ बढ़ाना, ३ सीधे, ४ होंगे, ५ बालिश्त ।

गुलाब दा फुल तोड़न वाले नूं

डाली नालों तोड़ न सानूं
असां हट्ट[1] 'महक' दी लाई,
लख गाहक जे सुंघे[2] आके
खाली कोय न जाई।
तूं जे इक तोड़ के लै गयों
इक जोगा[3] रह जासां
ओह वी पलक झलक दा मेला
रूप महक नस जाई[4]।

---

१ दुकान, २ सूंघे, ३ योग्य, ४ दौड़ जायगी, समाप्त हो जायगी।

प्रेम तरंगीं

पुन्यां नूं ओह सागर उछले
तांघ[1] अरश[2] दी करदा
दूर वसेंदे[3] सुहणे[4] वल्ले
उमल उमल जी भरदा
ज्यों ज्यों पर उस लगे चाँदनी
त्यों त्यों की ओह देखे ?
प्रीतम दा दिल प्रेम तरंगीं
दान उछाले करदा ।

---

१ आकांक्षा, २ आकाश, ३ बसने वाले, ४ भाव चन्द्रमा से है ।

डल

श्रीनगर की झील

नींवे[1] लुकवें[2] थाएं,
कुदरत बाग लगाया,
उचे[3] पाणी पाय,
अपनी वल्लों कज्जया[4],
परदा पाणी पाड़,
सुन्दरता न लुक सकी,
रूप सवाया[5] चाढ़,
निखर संवर सिर कढया[6]
तखता पाणी साफ,
विछिया होया जापदा,
परियां ज्यों कोहकाफ,
कंवलां दा विच नाच है।

1 नीचे, 2 छिपे हुए, 3 ऊपर, 4 ढंक दिया, 5 अधिक सवा गुणा, 6 निकाला।

लागियां

जी मेरे कुछ हुन्दा सैयो
उड़दा हत्थ न आवे,
कत्तण,[1] तुंमण,[2] हस्सण, खेडण,
खावण मूल न भावे,
नैन भरन, खिच्च चढ़े कालजे
बौरानी[3] हो जावां
तिंजण[4] देश बिगाना दिस्से
घर खावण नूं आवे।

---

१ कातना, २ धुनकना, ३ पगली, ४ कातने वाली कन्याओं का झुरमुट।

अन्दर दी टेक

सिक सिक रो रो ढूंढ ढूंढ के
मजनूं उमर गवाई,
पर पंघर[1] ना खाधी लेली
धा[2] उस पास न आई।
अन्त हार के बह[3] गया मजनूं
'लेली' 'लेली' जपदा,
लिव लेली विच लग गई अन्दर,
अन्दर लेली आई।
लेली दी धुन खिच खाय के
मजनूं लभदी[4] आई,
'मैं लेली' लेली पई कूके[5]
मजनूं स्याण[6] न काई।
'मैं लेली' 'मैं लेली' कूके
मजनूं लेली होया,
आपे प्रीतम बण गया प्रेमी,
टेक जां अन्दर पाई।

---

१ पिघलना, २ दौड़कर, ३ बैठ, ४ ढूंढती, ५ ऊँचे स्वर से कहे, ६. पहचान।

चढ़ चक्क ते चक्क घुमानीआं

चढ़ चक्क ते चक्क[1] घुमानीआं,
महींवाल[2] तों सदके पई जानीआं,
मैं तां बदलां नूं फरश बनानीआं,
उते नाच रंगीलडे पानीआं,
बाजी बिजली दे नाल लगानीआं
खिड़ खिड़ हसनिआं ओनूं[3] शरमानीआं,
तारे केसां[4] दे विच्च गुन्दानीआं,
चन्द मत्थे ते चा लटकानीआं,
नीले अरशां[5] ते ठुमकदी जानीआं,
मींह[6] किरनां दा पई वसानीआं,
'जिन्द कणीआं'[7] दी लुट्ट लुटानीआं,
'अरशी पींघ[8]' कमान बनानीआं,
रंग रूप दे तीर वसानीआं,
नूर अक्खियां विच समानीआं,
नूरों नूर हुवन्दड़ी जानीआं
नूर नूरियां[9] नूं पई लानीआं।

---

१ चक्र, २ पंजाब की प्रसिद्ध प्रेम कथा का नायक, ३ उसे, ४ बाल, ५ गगन, ६ वर्षा, ७ जीवन कण, ८ इन्द्रधनुष, ९ दिव्यात्मा।

इच्छाबल[1] दे चनार ते नूरजहां

किसी सुन्दरी के छूने पर

तेरे जैयां[2] कई वेर आ
हत्थ असानूं लाए,
प्यार लैण नूं जी कर आवे,
उछाल कलेजा खाए,
पर ओह् प्यार स्वाद न वसदा
होर किसे हत्थ अन्दर,
नूरजहां ! जो छोह[3] तेरी ने
सानूं लाड लडाए।

---

1 काश्मीर का एक सुप्रसिद्ध झरना, २ जैसी, ३ स्पर्श।

वीजविहाड़े[1] दे बुड्ढे चनार नूं

सदियां दे हे बुड्ढे बावे !
    कितने गोद खिडाये[2] ?
कितने आए छावें[3] बैठे
    कितने पूर लंघाए ?

---

१ काश्मीर में एक स्थान, २ खिलाये, ३ छांह ।

अणडिट्ठा[1] रसदाता

बुल्लां[2] अधखुल्लयां नूं, हाय
मेरे बुल्लां अधमीटयां नूं
छुह गिआ नीं, लग गिआ नीं,
कौण कुझ ला गिआ ?
स्वाद नीं अगम्मी[3] आया
रस झरनाट[4] छिड़ी
लूं लूं[5] लहर उठिया
ते कांबा[6] मिट्ठा आगया ।
होई हां स्वाद सारी,
आपे तों मैं आप वारी,
ऐसी रस-भरी होई
स्वाद सारे ध. गिआ।
हाय दाता दिसया ना[7],
स्वाद जिन्हें दित्ता ऐसा,
देंदा रसदान दाता
आपा किउं लुका गिआ[8] ?

---

१ अदृश्य, २ होंठ, ३ आगम्य, ४ रोमांच, ५ रोम रोम, ६ कपकपी, ७ दिखाई न दिया, ८ छिप गया ।

वैरीनाग दा पहिला झलका

वैरीनाग ! तेरा पहिला झलका[1]
जद अखियाँ विच वजदा,
कुदरत दे कादर[2] दा जलवा
लै लैंदा इक सिजदा,
रंग फिरोज़ी, झलक बलौरी
डलहक मोतियाँ वाली,
रुह विच आ आ जज़्ब होय
जी वेख वेख[3] नहीं रजदा[4]।
न कोई नाद सरोद सुणीवे
फिर संगीत-रस छाया,
चुप्प चान पर रूप तिरे विच
कविता रंग जमाया,
सरद सरद, पर छोहां तैनूँ
रूह सरूर विच आवे,
गहर गंभीर अडोल सुहावे
तैं किहा जोग[5] कमाया !

---

१ झलक, २ स्रष्टा, ३ देख-देख, ४ अघाता, ५ योग ।

अवांतीपुरे दे खंडर

अवांतीपुरा की रह गया बाकी
दो मन्दरां दे ढेर[१],
बीत चुकी सभ्यता दे खंडर
दसदे[२] समे दे फेर,
साखी[३] भर रहे ओस अक्ख दी
जिस विच मोतियाबिन्द,
हुनर[४] पछाणन वल्लों छाया
गुण दी रही न जिन्द।
जोश मजहब ते कदर हुनर दी
रही न ठीक तमीज,
राजी करदे होरां[५] ताईं
आपूं बणे मरीज।
बुत पूजा ! 'बुत' फेर हो पए
'हुनर' न परतया[६], हाय !
मर मर के बुत फेर उगम पए
गुण नू कौण जिवाय[७] ?

---

१ दो पुराने मन्दिरों के खंडहर जो श्रीनगर और अनन्त नाग के बीच हैं, २ बताते हैं, ३ साक्षी, ४ कला, ५ दूसरों को, ६ वापस आया, ७ जीवित करे।

कम्बदे पत्थर

मारतंड नूं मार पयां
'होई मुरत' कहिंदी लोई[1],
पर कंबणी[2] पथरॉं विच हुण तक
सानूं सी सही[3] होई,
'हाय हुनर ते हाय विद्या
हाय देश दी हालत!
हाय हिन्द फल फाड़ियां वाले
हर शिल कहिंदी[4] रोई।'

---

१ लोक, २ कंपकपी, ३ प्रतीत, ४ कह रही थी।

हठरस

ना कर तप सिंगी[1] रिख[2] हठिये[3]
रुस्स[4] न कुदरत नालों[5],
लुकवें[6] तेज वसण इस अन्दर
सूखम[7] हन जो वालों
हठ तों टप्प, रंगीज[8] रंग विच
रसिया हो रस जित्थी,
इक्क झलकारे विच नहीं इह
गुञ्झा देसण इस हालों।

---

1 एक तप का नाम, 2 ऋषि, 3 हठयोगी, 4 रुष्ट, 5 के साथ, 6 लुप्त, 7 सूक्ष्म, 8 रंग जा।

कोई हरया बूटं रह्यो री

मींह पै हस्या तार नाल[२] इक
तुपका[३] सी लटकन्दा,
डिगदा जापे, पर ना डिग्गे
पुंछयां रोय सुणन्दा[४] :
'अरशां तो लक्खाँ ही साथी
कट्ठे हो सां आए
कित[५] वल लोप यार ओ होए
मैं ला नीझ[६] तकन्दा।'

१ पौधा, २ के साथ, ३ बूँद, ४ सुनाता है, ५ किस ओर, ६ ध्यान पूर्वक।

आपे विच आपा

अम्मी[1] नी किलवल हो उठिआं
मैं डिट्ठा इक सुपना सी,
मेरी मैं विच होर कोई नी
दिसना[2] सी पर लुपना सी।
मोहदा ते भरनाट[3] छेड़दा
चसक मार ठंड पावे ओह,
दस्स कौण ओह, कदों वड़ गया,
क्यों दिसना क्यों लुकना सी?

---

१ हे माता, २ दिखाई देता था, ३ रोमांच।

विछोड़ा[1] वसल[2]

साबण ला ला धोता कोला[3],
दुद्ध[4] दहीं विच पाया,
खुम्ब चाढ़ रंगण वी धर्या,
रंग न एस वटाया[5],
विच्छुड़ के कालख सी आई
बिन मिलिआं नहीं लहिंदी[6]
अंग अग्ग दे लाके वेखो
चढ़दा रूप सवाया।

---

१ वियोग, २ मिलन, ३ कोयला, ४ दूध, ५ वदला, ६ उतरती।

होश मस्ती

क्यों होया ते कीकूँ[1] होया
    खप खप मरे सयाणे,
ओसे राह पवें क्यों जिन्दे!
    जिस राह पूर[2] मुहाणे[3],
भटकण छड्ड, लटक ला इक्को
    खीवी[4] हो सुख माणी,
होशां नालों मस्ती चंगी
    रखदी सदा टिकाणे[5]।

---

१ कैसे, २ असंख्य लोग, ३ गुथ गए, ४ विभोर, ५ ठिकाने।

रौशन आरा यात्रियाँ नूं

मेरी कबर उदाले[1] कुदरत
बाग सुहावा[2] लाया
बाग सैर नूं सब कोई आवे
कबरों परे रहाया[3],
लोथ[4] नहीं वे लोको! मैं हां,
क्यों जचदे[5] ते हटदे?
फुल, फल, फली, कली ते पत्ते
महियों[6] रूप वटाया।

---

१ इर्द-गिर्द, २ सुन्दर, ३ रहे, ४ लाश, ५ संकोच करते, ६ मैंने ही।

दर्द देख दुख आंदा

दुनियां दा दुख देख देख दिल
दबदा दबदा जांदा,
अंदरला[1] पंघर[2] वग[3] टुरदा
नैणों नीर वसांदा,
फिर वी दर्द न घटे जगत दा
चाहे आपा वारो,
पर पत्थर नहिं बणाया जांदा
दर्द देख दुख आंदा।

---

१ अन्तरात्मा, २ पिघल कर, ३ बहता।

इच्छाबल दा नाद

इच्छाबल[1] जद नाद तेरा आ
पहिला कन्नीं[2] पैंदा,
भर सरूर सिर विच इक जांदा
झूम इलाही लैंदा,
हीरे वरगी चमक नीर दी
अक्खां नूं मस्तांदी,
बेसुधिआं[3] दा झूटा आवे
चढ़या हुलारा रैहंदा।

१ काश्मीर का एक सुप्रसिद्ध झरना, २ कानों में, ३ आत्मविस्मृति।

न होए ओहले

लग्गे प्यार तां प्यारडा पास वस्से
कदे[1] अक्खियां तों न होए ओहले[2],
कदे अक्खियां तों जे होए ओहले
सूरत ओसदी दिलों न होए ओहले,
सूरत ओसदी दिलों जे होए ओहले
नाम जीभ तों कदे न होए ओहले,
नाम जीभ तो कदे जे होए ओहले
सुरत देह तों, शाला[3] तद होए ओहले।

---

१ कभी, २ ओझल, ३ ईश्वर करे।

इच्छाबल ते डूंघियां[1] शामां

प्रश्न :

संझ होई परछावें छुप गए
 क्यों इच्छाबल तूं जारी ?
नै[3] सरोद[4] कर रही उवें[5] ही
 ते टुरनों[6] वी नहिं हारी,
सैलानी ते पंछी माली
 हन सब अराम विच आए,
सहम स्वादला छा रिहा सारे
 ते कुदरत टिक गई सारी।

चश्मे दा उत्तर :

सीने खिच्च[7] जिन्हां ने खादी
 ओह कर अराम नहीं बहिंदे।
निहुं[8] वाले नैणां की नींदर
 ओह दिने रात पए वंहिंदे[9]।
इक्को लगन लगी लई जांदी
 है टोर अनन्त उन्हां दी,
वसलों[10] उरे मुकाम न कोई,
 सो चाल पए नित रहिंदे।

१ गहरी, २ संध्या, ३ नदी, ४ राग, ५ वैसे ही, ६ चलने से, ७ आकर्षण, ८ स्नेह, ९ बहते हैं, १० मिलन।

दिल्ली दी इक बेनिशां समाध

जीवन्द्या[1] ना मिलिआ सुहणा
अन्त समें न आया,
मुख-यात्रा ना कीत्युस[2] आके
सिहरा वी ना भिजवाया,
बणी समाध जगत आ ढुक्का[3],
सुहणे झात न पाई,
शाला! मिटे न तांध[4] असाडी
तुसीं करो मन भाया।

---

१ जीवन रहते, २ उसने की, ३ पहुँचा, ४ आकांक्षा।

साईं लईं तड़प

‘तड़प-गोपियां’ कृष्ण मगर[1] जो
लोकीं पए सुणावन,
‘लुच्छण-नरसी’ पुन्नूं पिच्छे
जो थल तड़प दिखावन,
रांझे मगर हीर दी धाबर[3]
मजनूं दा सुक जाणा,
एह नहीं ‘मोह-नज़ारे’ दिसदे
एह कोई रमज़[4] छिपावन।
हे अरूप! इह तड़प उहो नहीं
धुरों तुसां जो लाई
की इह चिणंग[5] नहीं उह जिहड़ी
तुसां सीनयां पाई
मिलन तुसां नूं दी ए लोचा[6]
ए है तड़प तुसाडी,
जित्थे रमज़ पवे कोई कटकी
ए कमली हो जाई।

---

१ के लिए, २ के पीछे, ३ घबराना, ४ भेद, ५ चिनगारी, ६ लालसा।

कुतब दी लाठ

की तूं कुतब ! कुतब दा जाया[1]
सैमटिक हैं तूं असलों ?
या पत्थर, तूं पुत्त[2] पिथौरा
आरया हैं तूं नसलों ?
की तूं कुतब ध्रू[3] धरती दा
छोटा उसदा भाई,
विच असमान अटल 'धुर' आ है
तूं 'धुर' हैं इस थाईं[4] ?
चन्द्र राज ने इशत धात दा
थम्म[5] जिवें बनवाया
यादगार अपणी दी खातर
इस थां ते गडवाया,
तिवें दस तुध[6] यादगार हित
पृथी राज बनवाया ?
हिन्दू राज गए दा बाकी
तूं नीशान रहाया ?

---

१ बेटा, २ बेटा, ३ ध्रुव, ४ स्थान, ५ स्तम्भ, ६ तुम्हें ।

गंगा राम

विच जंगल इक उजाड़ बड़ी
एक तोता बैठा रोंदा है,
डर उठदा, तकदा,[1] टपदा है
तक तक के फाया[2] होंदा है।
खा सहम कदे छह[3] बहिंदा[4] है
बन्ह[5] आस कदे तुर पैंदा है,
चक[6] टंग कदे अख मीटे है
थक खम्भ[7] कदे फड़कैंदा है।
इउं[8] डावां डोलक हुन्दे नूं
भुख त्रेह[9] ने नाल सताया है,
पर दुख-हरता इस दुखिए दा
कोई लैण सार[10] न आया है।
सी पिप्पल इक उदार बड़ा
कुछ दूर सुहावा[11] लहिर रया,
इक डार उडन्दी[12] तोतयां दी
इस ते आ बैठ अराम लया।

---

१ देखता, २ दुःखी होता है, ३ भयभीत, ४ बैठता, ५ बांध, ६ उठा कर, ७ पंख, ८ यूँ, ९ प्यास, १० खबर, ११ सुन्दर, १२ उड़ती हुई।

झुम झूमण डाल हिलन्दियां[1] ते
टुक[2] गोल्हां[3] खाण अचिन्त बड़े,
खुश हो हो चहि चहि शोर करन
फिर चार चुफेरे नजर लड़े,
इक तोते डिट्ठा दूर बड़ी
कुई वीर असाडा विलक[4] रिहा,
विच दुःख तसीहें[5] पया किसे
खम्भ हुन्दयां ते है ढिलक रिहा।
इह मार उडारी पास गिआ
जा कहिंदा[6]: 'तूं क्यों सिसक रिहा?
हैं दुखिया क्यों दुखियार बड़ा
विच सहिम उदासी बुसक[7] रिहा?
आ मार उडारी नाल मिरे,
लै चल्लां उपर वृच्छ[8] बड़े,
मत एथों[9] बिल्ली कुत्ता आ
निज पेट भरन नू चुक खड़े[10]।'
सुण तक्क कहे वल वृच्छ जरा:
'की मैं जा उथे सकदा हां?

1 हिलती हुई, 2 टुकड़े करके खाना, 3 गूलर, 4 बिलख, 5 तकलीफ, 6 कहता, 7 सिसकी भरना, 8 वृक्ष, 9 यहाँ से, 10 उठा ले जाय।

कुई चुक्कण वाला नाल नहीं
मैं सोच सोचणों झूरदा[1] हाँ।'
'शिह!' तोता कहिंदा झिड़क जरा,
'तूं उड़, परां नूं मार, भरा!'
पर मारे पर उड सक्के ना
हो गंगा राम लचार रिहा।
इह हाल अनोखा तोते ने
नहीं अग्गे सुणाया[2] डिट्ठा[3] सी,
उड गया भरावां[4] दस्सण नूं
एह नवां स्वादल[5] चिट्ठा सी।
जा सारा हाल सुणायो सू
सुण डार हिठांहाँ[6] आइ गई,
तक सभने आखया : 'तोता है'
की सिर इस आय बलाय पई?'
इक कहिंदा : 'वीरा सावया[7] वे
तूं क्यों ए चाल बणाई है?
विच महम घुट्टिया[8] दबक रिहा
क्यों उड्डण वाण भुलाई है?'

१ झिझकता हूँ, २ सुना, ३ देखा, ४ भाइयों, ५ मनोरंजक, ६ नीचे, ७ हरे रंग का, ८ घुटा हुआ।

रो कहिंदा गंगा राम: 'बई!
मैं वतनों[1] विछुड़ बिहाल[2] बड़ा,
भुख त्रेह ने मार मुकाया हाँ
दुख सहम पिआ सिर आन कड़ा।'
इक तोता कहिंदा: 'दस्स बई!
कुछ हाल वतन दा अपने तूं?
विच[3] बिरहों जिस दे रोंदा हैं
विच पहुँचण चाहें जिस दे तूं!'
सुण आखे गंगा राम: 'सुणों,
मैं देव-लोक दा वासी हां,
सुख मौज बहारां भोग बड़े
दिन रात रहां विच हासी सां।'
इक तोते टुको[4] बात कहे:
'इस थां[5] ते रहिणा ठीक नहीं,
उड चलो उताहां पिप्पल ते
गल बाकी ओथे[6] चल सही।'
उड डार[7] चली पर गंगू जी
उड सकण न फड़ फड़ करदे हैं,

---

१ देश से, २ बेहाल, ३ में, ४ बात काटी, ५ स्थान, ६ वहीं, ७ पंक्ति।

पर सावे वीर उडावण दी
विधि उस दे मन ते धरदे हैं।
कुई कहे : 'खलार[1] परां नूं तूं,'
कुई कहे : 'हिक[2] दा जोर भरीं।'
कुई कहे : 'हम्मता मार ज़रा।'
कुई कहे : 'रिदे[3] तों भरम हरीं,'
कर पक्क भरोसा अपने ते
समरथ आप तूं उड्डण नूं
फिर होय अचिन्त चला चल तूं
कर दूर दिलों डर डिग्गण[5] नूं।'
इयों हिम्मत हीया[6] दान करन
कुछ डौल नाल सिखलांदे हैं,
कुछ डिगदे नूं दे आसा[7] ओ
उस पिप्पल ते लै जांदे हैं।
इक तोते आख्या : 'गोल्ह छको,[8]
ढिड भुग्गा फल दे नाल भरो,
रज जावो तदों निहाल करो
उस देव पुरी दे हाल ररो।'

---

१ खोल, २ छाती, ३ हृदय, ४ दूर कर, ५ गिरने, ६ साहस, ७ आश्रय, ८ खाओ।

टुक गोल्ह सु गंगा राम लई
पर स्वाद न आया, सिट्ट[1] दई
फिर होर लई, टुक सिट्ट दई
नक वट्ट कहे[2] : 'ए स्वाद नहीं।'
पर जालम भुक्खा पेट बुरा,
बिन भुलके[3] करे अराम नहीं।
सो रोंदे धोंदे गंगू ने
कर उगल निगल खा गोल्ह लई।
हुण पुच्छण हाल विलायत दा
उह गंगू नाल सुआद कहे :
'मैं देवतयां विच वसदा सां
जिथे[4] जीवन सदा अचिन्त रहे,
मैं वस्सणे[5] नू इक महल सिगा[6]
जो लोहे नाल बनाया सी;
इस अन्दर बैठयां निरभै सां
कुई वैरी निकट न आया सी।
कुई भन्न[7] न इसनू सकदा सी,
फिर पौण[8] अजायब वगदी सी,

---

१ फैंक दिया, २ नाक चढ़ा कर कहने लगा, ३ मरे हुए, ४ जहां,
५ निवास, ६ था, ७ तोड़, ८ पवन।

ते चूरी मिट्ठी मिलदी सी
जो बहुत सुआदी लगदी सी।
कई मेवे मिरचां मिलदे सन
कई भोजन सोहणे आंदे सी,
कई प्यार लाड नित हुन्दे सी
कई लोकी गीत सुणांदे सी।
दिन रात मौज ही रहिंदी सी
कुई मुशकल कदे न पैंदी सी,
नहीं चिन्ता आके खहिंदी[1] सी
मैं लोड़ उन्हां सिर बहिंदी सी।'
इह कहि के गंगा राम हुरीं
'लट पंछी पट पट' पढ़दे[2] सी,
'खा चूरी' मुड़ मुड़ कहिंदे सी
कई टप्पे यादों जड़दे सी।
ए भ्यानक बोली डाहिस भरी
सुण कम्बी सारी डार बड़ा।
कुछ समझ सके ना की होया
इह की बकदा है सबज चिड़ा?

१ सताती, २ पालतू तोते को पिंजरे में पहली बात जो लोग साधारणतया सिखाते हैं वह है : 'लट पट पंछी चतुर सुजान, सब का दाता श्री भगवान।'

जद चुप होई तद सोच पई
सब फिकर दुड़ांदे थक्के नी,
नहीं समझ पिआ जो ओस[1] किहा
फिर पुच्छां[2] पुछ पुछ अक्के[3] नी।
कुझ स्याणे तोते उड्ड गए
इक्क सिम्मल दा सी बृछ[4] बड़ा,
इक्क बहुत पुराणे तोते दा
खोह इसदी विच सी इक्क घुरा।
जा सब ने सीस निवाया ए
ते सारा हाल सुणाया ए,
फिर पुछया : 'बाबा ! दस्स असां,
की तेरी समझे आया ए ?'
उस बुड्ढे कई जमाने वरते
दुनिया दे विच डिट्ठे से,
कई हाल सुणे ते पुच्छे से
कई वाचे पिछले चिट्ठे से।
'हूँ', कहिंदा खोड़ों निकल्या सी
ते उड्ड पिप्पले आया सी,

१ उसने, २ प्रश्न, ३ उकता गए, ४ वृक्ष।

तक ओपरे[1] आए तोते नूं
इक डूंघा ध्यान जमाया सी।
झट ताड़ गिआ : रंग पिल्ला है
ते हिल्लण जुल्लण ढिल्ला है
अख दबक दबक के तकदा है
ज्यों सिर ते हरदम बिल्ला है।
बुल्ह[2] ढिलके, मत्थे जोत नहीं,
विच खम्भां खिचवीं ताण नहीं,
निज ताकत दी कुई शान नहीं
कल[3] चढ़दी दी कुई आन नहीं।
उस बावे बुड्ढे शक्क पिआ :
इह कैद पिआ या दास रिहा,
नहीं देव-लोक दे पास गिआ,
लै ऐवें[4] उब्भे सास रिहा।
फिर नाल प्यार दे बोल पिया :
'दस बच्चू बरखुरदार बड़े
तैं देव-लोक तों विछड़ कदों
दे लीते सिर ते दुख कड़े?'

---

१ अपरिचित, २ ओष्ठ, ३ चढ़ती कला, उन्नतशील भावना, ४ यूं ही।

गो गंगू आखे: 'सैर करन
टुर देव-बाल अज आए सी
चुक मैंनूं नाल लिआए सी
फिर खेडीं सभ लुभाए सी।
ओ खेड खिडन्दे चुहल भरे
ते टपदे नचदे दौड़ रहे
छड[1] मैंनूं किधरे निकल गए
मुड़[2] ओस[3] थाउं[4] नहीं परत लहे।[5]
ओह गए किसे वल होरस नूं
पट पट के अक्खी वेंहदा[6] सां
फिर टुर टुर थां थां लभदा सां
मैं हारिया[7] भाल करेंदा सां।'
'हूँ', बुड्ढा कहिंदा: 'दस्स बई!
तूं देव-लोक नूं जाणा है?
कि रहिके जंगल वाँग असां[8]
बन बन दा मेवा खाणा है?'
'हाँ, देव-लोक नूं जाणा है,'
कहि गंगू: 'राह दसाया जे,

---

१ छोड़, २ फिर, ३ उस, ४ स्थान, ५ वापस आए, ६ देखता, ७ हारा हुआ, ८ हमारी तरह।

इस डांवां डोल वलायत तों
मैं देश विखे[1] अपड़ाया[2] जे।'
'की ओथे[3] मिलदा खोपा है ?
की फल बदाम दा सोमा है ?
की ओथे स्वादल पौण वहे,
की चलदी गंगा गोमा है ?'
इह कहिके बुड्ढे तोते ने
चौफेरे नजर दुड़ाई सी,
वल डार आपणी 'ध्यान करो'
इक ऐसी अक्ख तकाई सी।
सुण गंगू कहिंदा : 'आखां कीह,[4]
कुझ बोल्या किहा न जांदा ए,
रस आवे वेखिए अक्खीं ज़े
बिन डिट्ठे समझ न आंदा ए।'
उस बुड्ढे तोते 'ठीक' किहा :
'नहीं डिट्ठे वरगा सुणया हो,
जो हड्डीं आके वरत्या ना,
की नाल खयालां पुणयां हो,

1 में, 2 पहुंचा दो, 3 वहां, 4 क्या कहूं।

पर तद वी सोच बड़ी शै है,
इक सच्च झूंठ दा तक्कड़[1] है,
कर दसदी निर्णय मुणियां दे
की सच्च जचे की झक्कड़[2] है?
मैं पुच्छां जो कुछ प्यारे जी!
दे उत्तर असां निहाल करो,
इस जंगल वासी पशुआं नूं,
कुछ मत्त[3] दिओ, खुशहाल करो।
जो मन्दिर सुन्दर मिलया सी
विच जिसदे सुखिए वसदे से,
की बन्द चुतरफों होया सी
या उसनूं इक दो रसते से?'

गंगाराम : 'इक रसता उसदा हैगा सी
पर बन्द सदा उह[4] रहिंदा सी,
मत कोई मैंनूं खा जावे'
इस गल तों सुखिया सैंदा[5] सी,
सन रसते चार चुफेरे वी
धुप पौण खुली आ जांदी सी,

१ तराजू, २ झूठ, ३ मति, ४ वह, ५ सोता था।

डर मैनूं रता न रहिंदा सी,
कुई आण बला न खांदी सी।'

बुड्ढा तोता : 'पर दस्सीं, ताकी मन्दिर दी,
बस किसदे खोलण मारन सी?
जे बस्स न तेरे रक्खी सी
तां इसदा कहु की कारण सी?
जे जिउड़ा[1] चाहे निकलण नूं
कोई तेरी आखी[2] मनदा सी?
जां बज्झा[3] मरजी दूए[4] दी
तूं विच्च पिआ सिर धुनदा सी?
जो तूं दरवाजे दसदा हैं
की उसतों बाहर आंदा[5] सैं?
जां विच्चे रहिके, उहनां तों
दरशन ही देंदा लैंदा सैं?'

गंगा राम : 'सी देवत्यां दे वस्स सदा
बस मेरे रक्खण माड़ा[6] सी,
उह बन्दी ना, इक राखी[7] दा
मैं द्वाले तकड़ा वाड़ा[8] सी।

---

१ मन, २ कहना, ३ बँधा हुआ, ४ दूसरे, ५ आता, ६ बुरा, ७ रक्षा, ८ बाढ़।

ओह् रमते मौज वहागां दे
वा[1], चानण, स्वादां देंदे सन,
पर मैंनूं अन्दरे रखदे सन
ओह् दाते रक्ख[2] करेंदे[3] सन।'

बुड्ढा तोता : 'जो अमृत खाणे मिलदे से,
उह् देंदे तैनूं आपे[4] सी
या मूंह् मंगयां[5] वी देंदे सी
जो तैनूं लगदे मापे[6] सी?'

गंगा राम : 'जो भावे ओह्ना माप्यां[7] नूं
निज बालां वांगू[8] देंदे सी,
मैं मंगण कोलों संगदा[9] सां
जो चाहुण आप करेंदे सी।'

बुड्ढा तोता : 'जे बाल कदी कुई उह्ना[10] दा
तैं नाल खेडदा हसदा सी,
ते तैथों[11] चक वढींदा[12] सी
उह् जा माप्यां नूं दसदा सी,

१ हवा, २ रक्षा, ३ करते थे, ४ आप ही, ५ मुँह माँगा, ६ माता पिता, ७ माता पिता, ८ भांति, ९ शरमाता था, १० उनका, ११ तुम से, १२ दाँत काटा जाता था।

तद् तैनूं सोटी पैंदी सी
ते चूरी बन्द रहांदी सी?
जां गल न गौली[1] जांदी सी,
कुई आफत सिर न आंदी सी?'

गंगा राम : 'जे मैं अपराध कमांदा[2] सां
तद् कीते[3] दा फल पांदा सां,
पर मैं बीबा[4] बण रहिंदा सां
बस लगदे नहीं दुखांदा सां।'
इह कहिदा 'लटपट पंछी' दी
फिर गंगू बोली पांदा ए,
सुण तोता धौण[5] उठांदा ए
ते अगली गल चलांदा ए।

बुड्ढा तोता : 'इह बोली जिस विच बोलें तूं
इह देव-लोक दी बाणी है?
की रमज़[6] भी दस्सी तैनूं है?
जां कंठ करन दी ठाणी तैं?
जे समझें तां समझावीं तूं
की इसदा सिट्टा[7] जाता ई?

---

१ बात पर कोई ध्यान न दिया जाता था, २ करता था, ३ किए, ४ भलामानस, ५ गर्दन, ६ गूढ़ अर्थ, ७ अर्थ।

की भेत समझ नूं लींते हन,
की विचों वध[1] पछाता[2] ई ?'

गंगा राम : 'मैं समझ नहीं मैं की बोलां,
जो बोलण सोई नकल करां,
ओह रीझण इहनां नकलां ते
मैं खुशी करन दी अकल करां।'
इह सुणके तोता हस पिआ,
सिर फेर डार नूं कहिंदा ए :
'कुछ समझया बरखुरदारो जे,
किस थां इह प्यारा रहिंदा ए ?
नहीं देव-लोक दा वासी ए
नहीं देवां रसते पाया ए,
उस मानुख धरती टुरदे ने
विच बन्दी कैद रखाया ए।'
हो अचरज सारे ग्रहक[3] गए,
पए बिट बिट सारे तकदे हैं,
वल बाबे मुड़ मुड़ वेंहदे[4] ने,
वल गंगू तकते जकदे[5] हैं।

---

१ शक्ति से बढ़ कर, २ पहचाना है, ३ चौंक उठे, ४ देखते हैं, ५ झिझकते हैं।

पा भूरी गंगू वेह्रे है,
फिर हेठां नज़र दुड़ावे है,
मत किधरे ढूंड करेंदा जे
कोई वतनी[1] तुरिआ आवे है।
हुण बुढे तोते आह भरी,
फिर नैण अकाश उठांदा ए,
जो अक्खी[2] कदी न रोंदी सी
दो अंभू[3] भरके ल्यांदा ए।
ना गमजे चुम्मे नैण कदे
ओ उट्ठे रसीले रंग वरे,
विच गड्डु अकाशां अदब भरे
ओ बाबा एं[4] अरदास करे:
'हे सभ तों उच्चे उडण वाले!
अरशां तों वी परे परे!
उच्चे वस्सो बिना आल्हणे[5]
बिन थंम्मां तर गगन रहे!
पौण, अकाश, धरत, तत्त, पाणी
हर थां तों दिल-पीड़ सुणो,

१ देशवासी, २ नेत्र, ३ आंसू, ४ ऐसे, ५ नींद।

सुण अरदास[1] पशू दी, दाते!
कदे न रक्खीं मिहर खुणों[2]!
सानूं रक्ख सुतन्तर, दाते!
बन्दी साथों दूर ढहे[3],
परतन्तर ना कदे करावीं
खुल दा सदा शऊर[4] रहे।
मुंह तकिए[5] ना कदे[6] कैद दा
कदे गुलामी आवे ना,
गोला[7] कदे न करीं किसे दा
पिंजरे सानूं पावे ना।
दास बणा न खिदमत पावीं
साडी खुल्ल[8] खुहावीं[9] ना,
दूए दे वस्स पाके सानूं
मन दी मौज गवावीं ना।
आज़ादी हक तेरा दित्ता,
सभ नूं दात कराई तूं,
त्रुठ[10] प्रभू इह दात न खुस्से[11],
दित्ती दई रहाई तूं।

---

१ विनती, २ बिना, ३ दूर गिरे अर्थात् दूर रहे, ४ ज्ञान, ५ देखिए, ६ कभी, ७ दास, ८ स्वतन्त्रता, ९ छीनना, खोंसना, १० प्रसन्न हो, कृपा कर, ११ छिन न जाय।

मरज़ी हेठ किसे दी मरज़ी
धक्के[1] नाल न लगे कदी,
रोका किसे किस्म दा, साइयां[2] !
पवे कदे ना ठंग कदी ।
जंगल वास्ता बेशक देवीं
माड़ी, महल न शहर दईं,[3]
तन नूं कज्जण[4] खुशी मिले
पर खुल्ल कदे ना खस्स लईं ।
बेशक सभडी चोग[5] खिलारीं
हुंढ[6] हुंढ दिन पेट भरे,
पेट भरे चहि ऊणा[7] रहि जए,
खुल्ल न साडी कदे मरे।
रुक्खों[8] रुक्ख फिरावीं सानूं[9],
डालों डाल उडावीं तूं,
धरेकों[10] धरेक टपाके सानूं
कौड़े फलीं रिझावीं तूं ।
बन, परबत, जल, थलीं, पहाड़ीं,
रेत थलीं थां देवीं तूं ।

---

१ बल से, २ हे साईं, स्वामी, ३ देना, ४ वस्त्र, ५ दाना, ६ परिश्रम, ७ खाली, ८ वृक्ष-वृक्ष पर, ९ हमें, १० एक वृक्ष का नाम जो नीम के परिवार का होता है ।

खुल्ल जु दित्ता हक्क सबस[1] नूं
दे के कदे न लेवीं तूं !
आन बान दिल शान असाडी
तेरे ताण[2] रखावीं तूं !
प्यार आपणे बाझ, प्रभू जी !
दूजी कैद न पावीं तूं !
कैद करन ते आखण राखी[3]
दरशान देव करावीं नां,
पाण पिञ्जरे, देण चूरियां
ऐसे सखी[4] मिलावीं नां ।
खम्भ[5] असाडे, पैर असाडे,
दिल साडे नूं रोक करे,
धर्मी ऐने असां[6] न मेलीं
डोर पाय हत्थ वाग फड़े[7] ।
खुल्हे उडन्दयां, मौज फिरन्दयां
बाज के भिल्ला आण पवे,
मदद विहूणे[8] राखी वाजों[9]
कुल[10] सारी चाहि[11] नाश हुए,

---

१ सब को, २ शक्ति, तेरे आधीन, ३ रक्षा, ४ दाते, ५ पंख, ६ हमें, ७ पकड़े, ८ बिना, ६ बिना, १० वंश, ११ भले ही ।

जद तक इक्क असां चों जीवे
मुल्ल विच ओस स्वास वहे।
इक्क अरदास होर है साइयाँ!
मिह्र करीं दे कन्न सुणी
पशू असी हां, पशू रखावीं
बेशक सखणे[1] सभन[2] गुणीं।
उह ना अकल असां[3] नूं देवीं
उह तहज़ीब दिखावीं नां,
ओह सभ्यता दूर रहावीं
विद्या ओ सिखावीं नां,
जाल पाण ते घडन पिंजरे
कैद पाण सिखलावे जो
खंभ तोड़ कर बोट[4] बहावे
दूज्यां बन्दी पावे जो,
लोक गुलाम बनाय बहाले[5]
सुरतां कतल करावे जो,
तेरे रचे सुतन्तर बन्दे
पर दे ताण[6] सुटावे जो।

---

१ खाली, २ सभ्य, ३. हमें, ४ पक्षी जिसने अभी उड़ना न सीखा हो, ५ बिठा दे, ६ पराधीन।

खुल्ल हरण दी जाच असानूं
साइयां, कदे सिखाईं नां,
पशू असानूं चाहे रक्खीं
मानुख कदे बनाईं नां।
चहे जंगली चहे पशु रख
दाने[1] चहे बनाईं नां।
'खुल्ल वेचण' दी अकल न देवीं
'खुल्ल खोहण'[2] जाच सिखाईं नां।
'खुल्ल रखण' दी गैरत देवीं
'खुल्ल खुहणों' शरम दिखावीं तूं,
खुल्ल लैये, खुल्ल दान कराइये
खुल्ल दे दास बनावीं तूं।
मच्च[3] मरे ना कदे असाडा
गच्च[4] कदे दिल ढावे ना।
खुशी रहे मन भरी असाडे
कच्च कदे सिर आवे नां।
गैरत ठरन[6] खून ना देवे,
अणख[7] रगां विच रक्खे जी,

१ बुद्धिमान, २ छीनना, ३ स्वाभिमान, ४ ग्लानि, ५ तोड़े, ६ ठंडा पड़ना ७ स्वाभिमान।

भुजां साडियां[1] ताण लाज रहि
अकव उचेरी[2] तके जी।
मोढे[3] तणं ताण विच सिद्धे[4]
गरदन आकड़ भरी रहे,
जोर रहे हिक साडो भरिआ
डर खा धौण[5] न कदे ढहे।

[1] हमारी, [2] ऊपर, [3] कन्धे, [4] सीधे, [5] गरदन।

गांधी जी

: १ :

ओह सुत्ता पिआ सी सड़क दे लागे[१],
धरती दी गोद विच[२],
हरे हरे घाह दी विछाउणी विछी
सी गोद विच,
मिट्ठी मिट्ठी महिक उठ रही सी,
रुमके रुमके[३] लंघ रही पौण[४]
इक युवती वांगूं खड़ो गई :
'कौण ए एह
मैनूं महिक-मगन करन हार ?
किस मां दा जाया[५] ए ?
किस भाग भरी[६] दा प्रीतम ए ?'
धरती :
'एह सुगन्धी ए,
हुण सुगन्धी देणहार ए,
सुगन्धी-दाता होण करके
आखदे हन :
'गांधी' ए।'

---

१ समीप, २ में, ३ धीरे-धीरे, ४ पवन, ५ पुत्र, ६ सुभागिन।

: २ :

पौन हिलौण[1] लग्गी तां
धरती तों आवाज़ आई :
'ना छेड़ सुगन्धी देणहार नूं !
मते फेर हो जाए सुगन्धी।
भोलिए !
सुगन्धी-दाता हुण[2]
नैणां दा विषय ए,
जद हो गया मुड़[3] के सुगन्धी
तां नां रहेगा नैणां दा विषय।
सुगन्धी सुगन्धी रहेगी
पर
तेरे मेरे नैण
न देख सक्कणगे सुगन्धी नूं[4]।'

: ३ :

ऐ इनसान हया !
तैनूं साज्या सी दरदे-दिल वास्ते,
तेरे खमीर[5] विच गुन्ही सी

१ हिलाने, २ अब, ३ फिर, ४ को, ५ प्रकृति में।

हम दरदी ।
ऐ बे हया !
जिस वेले तूं बेदरद हो उठदा हैं
दरद दिल तों विहूणी[1] दुनिया वी
दहल उठदी है,
कम्ब ग्रउंदी[2] है
तेरी पत्थर-दिली उते[3] ।
ऐ इनसान !
कदे तैथों सबक लैण
फरिश्ते औंदे[4] सन
हमदरदी दा, दिल दे-दिल दा,
दिल प्रेम दा ।
हुण, हा शोक !
तू हेठां हेठां[5] डुरया जांदा हैं
हिंसक पशुआं तो बी हेठां
हेठां, हेठां,
तेरी सभ्यता की है ?

---

१ हीन, बिना, २ काँप जाती है, ३ पर, ४ आते थे, ५ अवनति की ओर चला जा रहा है ।

: ४ :

ठाह ! ‘मेरी गोली वज्जी,
आवाज़ बन्द हो गई,
सदा लई बन्द हो गई
हुण न सुणी वेगी’’
कह के कातल ने ताली बजाई।
पर :
‘पत्थर-वज्जे-सरोवर’ विच[२]
लहर-तरंग वांग लहर उट्ठी
गई जगत दे अखीर तक
लहरोंदी :
‘गांधी की जै’
गई आवाज़ गूंजदी
दुनिया दे अखीर तक।
परत[3] परत आएगी,
रहेगी गूंजदी
गुम्बद दी आवाज़ वांग :
‘गांधी की जै।’

---

१ सुनाई देगी, २ वह सरोवर जिसमें पत्थर फेंका गया हो, ३ पुनः वापस।

: ५ :

शौरय,
वाह शौरय
निहत्थे ते वार !
बिना वंगारे[1] दे वार !
बृद्ध ते वार !
साधू ते वार
संगत अग्गे हत्थ जोड़े खड़ोते
ते वार !
रुमाल पै गया
रामायण महाभारत दे
शौरय उत्ते ।

: ६ :

मैं डिट्ठा[2] नीति-गगनां दे चढ़े
पूरणमा[3] दे चन्द[4] नूं,
'ठाह' करके गोली वज्जी
चन्द नूं,
ओह करोड़ां हीरा-कणियां हो ढट्ठा[5]
पर

१ जिसे चुनौती न दी गई हो, २ देखा, ३ पूर्णिमा, ४ चाँद, ५ गिरा

धरती द गरद गुबार विच
पहुँचण तों पहलों
इक इक कणी नूं बोच लया[1]
चाली करोड़ चकोर ने
ते बणा लया चूड़ामणी
अपने सीस दी।

: ७ :

ओह मर गया,
ओह अगनि-भेट हो गया,
विभूति ते फुल्ल
जमना, गंगा, नरवद लै गैयां[2],
पर
ओह जी उट्ठिया
सीनयां विच,
खेल पया
प्यार पंखुड़ियाँ विच,
हाँ,
अमर हो गया
जगत-कदरदानी दे[3]
रंग महल्लां विच।

---

१ लपक लिया, २ गई, ३ प्रशंसा।

: ८ :

दीवा फुट्ट[1] गया,
तेल निखुट्ट[2] गया,
वट्टी[3] हुट्ट[4] गई,
पर
जगा गई घट-दीपमाला
हुट्टदे दीवे दी लाट-छोह[5] ।

: ९ :

अमर हो गया
गोली नाल मारया गया
अहिंसा दा पुजारी
इतिहास विच,
देख, सत्या[6] अहिंसा दे पुजारी दी
अमर कर दित्ती सु
हिंसक नूं वी अपने नाल
इतिहास दे पतरयां विच;
पर देख नयां[7]

---

१ टूट गया, २ समाप्त हो गया, ३ बाती, ४ बुझ गई, ५ छूकर
६ सत्ता, शक्ति ७ न्याय ।

अण-डिट्ठे[1] नयां-करता[2] दा
मरीवणहार तां जीउ प्या
इतिहास विच वी
प्यार पींघ झूटदा,
पर हिंसक जीव्या
घृणा दी चरखडी चढ़्या
उसे इतिहास दे पतरयां विच।

: १० :

हिंसक ने मारया अहिंसक नूं
'अपणी नफरत' दा निशाना बणाके,
'जगत-नफरत' दा निशाना
बण गया आप ।
पर अहिंसक नफरत तों अजाणा[3] सी,
उस नूं उठा लया सनमान गोदां विच
आपणआं,
बेगानयां,
स्वदेशियां,
विदेशियां,

---

१ अदृश्य, २ न्यायकर्ता, ३ अपरिचित ।

सभ्य दुनियाँ दे सत-ओपरयां[1]
'वस एथे[2] सदा लई सोहणयां !'

: ११ :

नास्तक ने गोली मारी
कि आस्तक नेस्ती विच जा मिटे,
पर
आस्तक नूं गोली
वैद दी गोली हो लग्गी,
ओ जा खेल्या हस्ती दी गोद विच

: १२ :

अचरज है !
सम दृष्टा उत्ते
असम दृष्टि वाले दा
निशाना ठीक बैठे।

: १३ :

खुदियां दी गुलामी नूं मारके
जो हिंदू लै आया आजादी

---

१ सर्वथा अपरिचित, २ यहीं रह ।

हिदुआं लई, हिंदियां लई,
उस दे सीने मारदा है गोली
इक हिंदू !
ओ हिंदू ! तूं गोली नहीं मारी
हिंदू भाई नूं, स्वतन्त्रता दे दूत नूं,
तूं गोली मारी है
हिंदू जाती नूं, हिन्दी नसल नूं,
हाँ, तूं आवाज़ मारी है गुलामी नूं
विदेशी तौक जंजीरां नूं
काश ! ऐ काश ! तेरी आवाज़
न सुणन गुलामी दे दूत !

: १४ :

इतिहास तां
कदे सुशिख्यत[1] न होए इन्सान
ओह कदे ना भन्न गवाइये
जो आप मुडके घड़ न सक्किए।
की जाणिये[2]
कदे अल्पग्ग[3] दी बुद्धी विच

१ सुशिक्षित, २ क्या जाने, ३ अल्पज्ञ।

कीती भुल्ल भुल्ल हो भासे,
फेर :
पच्छोतावा[1]
पच्छोतावा
पच्छोतावा
फेर

....

: १५ :

काश !
मैं कदे न घड़दा !
जे मैंनूं पता हुन्दा,[2]
कि मेरे घड़े पिस्तौल,
तूं
'जगत-विख्यात' दा घात करना है,
मैं तैनूं कदे न घड़दा[3] !
मेरे हत्थों निकले पिस्तौल !
मैं तैनूं कदे न घड़दा ।

---

१ पश्चाताप, २ होता, ३ घड़ता ।

: १६ :

भारत भूमि दा वैण[1] :
विधातृ !
घड़के घल्लयोई[2]
सदियाँ दे बन्धना नूं कट्टणहार,[3]
सोहणयां !
दिन क्यों लिखा पायोई थोड़े ?
हाय,
हुन्दी जे तेरे मैं पास
लिखियाँ कलामां[4] नूं मैं मोड़दी ।

: १७ :

ओह जीवया सच्च लई
उसनूं मार लया सच्च दे प्यार ने।
ओह जीवया अहिंसा लई
उसनूं मार लया
अहिंसा दे प्यार ने ।
ओह हिंसा उठा देण लई आया सी
उसनूं हिंसा ही उठा लै गई।
ओह जीवया देश-हित लई

---

१ मातम, २ भेजा, ३ काटने वाला, ४ भाग्य-रेखा ।

उसनूं बोच लया
देश-हित दी जग वेदी ने ।

: १८ :

मैं डिट्ठा,[2]
फरिश्ते सो रहे सन,
इस खुशी विच नां
कि साडे विच [3] इक्क देवता
बण के आ रिहा है ।
पर
जिन्हाँ विच्चों आ रिहा सी
उन्हां दी वियोग-पीड़ा नाल
पीड़ित होके ।

: १९ :

आवाज़ आई : 'ठाह' ।
धुन उट्ठी :
'राम, रा....अ....म, रा....अ....अ....म ।'
ग़ैब विच्चों सद्द[4] आई सुकरात दी :
'आ जा मेरे भाई गांधी ! आ जा,
इस दुनिया पास इहो कुछ है,

---

१ लपक लिया, २ देखा, ३ हम में, ४ आवाज़ ।

इन्हां आपणयां पास
इहो कुछ है।
हाँ, एह नहीं जाणदे[1]
एह कीह कर रहे हन
पर ओह जाणदा है,
ओह जाणदा है
जीवन भला है कि मरन !
हां, किस वेले की भला है
ओह जाणदा है।'
सरीर तों विछड़ी गांधी रूह:
'तथास्तु !
मेरे भाई ! तथास्तु।'
गगन गूंजे:
'आमीन,
भाई, आमीन।'
मनसूर (ताड़ी मार के) :
'आपानुछावरिये[2]
इसे पुरसलात[3] तो लंघ के
औंदे हन।'

---

१ जानते, २ अपने आपको न्यौछावर करने वाले, ३ सुई के मुँह से भी छोटा स्थान।

: २० :

हे कुक्नूस[1] !
हे चाली करोड़ नूं
खम्भां हेठ लई उड्ड रहे
कुक्नूस !
तू गीत गाए
एकता दे, समता दे,
अहिंसा दे, अझुकता दे,
तेरे दीपक राग ने
इस वसन्त रुत्ते लै लई अगनी
अपणयां विच्चों ही;
हाँ,
भसम दी ढेरी
हो गया तेरा सरीर ।
अबरे रहमत !
आ !
ला झड़ी,
बरस घना,
घना हो के बरस;
भसम-ढेरी विच्चों

---

१ कुक्नूस एक गाने वाला पक्षी होता है जिसके गाने से आग निकलती है और उसमें वह स्वयं भस्म हो जाता है ।

ਫਿਰ ਉਗਮ ਪਵੇ ਕੁਕਨੂਸ।
निरास न होओ,
आस धारो,
अरदास करो[1]
कुकनूस दे कादर अग्गे।
प्रार्थना जारी रक्खो,
घल्ल देवे
प्रसाद-मेघावली अम्बरां तों
बरसे मया धार[2] —
उग्गम पवे मुड़ कुकनूस,
मुड़ आ सम्भाले
'सुतंतरता',
मुड़ आ करे
'सुतंतरता-सम्भाल।'

: २१ :

एकान्त है, कमरे विच कोई नहीं,
मद्धम मद्धम चानणा[3] है
रोशनदान विच्चों आ रैयां
चन्द रिशमां दा।

---

१ विनती करो, २ कृपा करके, ३ प्रकाश।

मलकड़े [1]
दरवाज़े दा इक्क ताक सरकया,[2]
कोई आया अन्दर छोपले,[3]
आहट नहीं आई,
मद्धम मद्धम सुर छिड़ पई
सुरीली सुर-आलाप दी
फिर अलाप सुर पदां विच हो बोली:
'रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।'
त्रभक[4] के मैं पुछ्या[5] :
गान्धी जीउ! तुसीं हो ?
आवाज़ आई :
'रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।'
गान्धी जी आप हो कि धुनि[6] आप दी ?
आवाज़ आई :
'अल्ला राम
अल्ला राम
रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।'

---

१ धीरे से, २ सरका, ३ अडोल, ४ चौंककर, ५ पूछा, ६ ध्वनि।